आमने-सामने

बड़ी मुश्किल है राह पनघट की
-नैनादेवी

विद्या राव

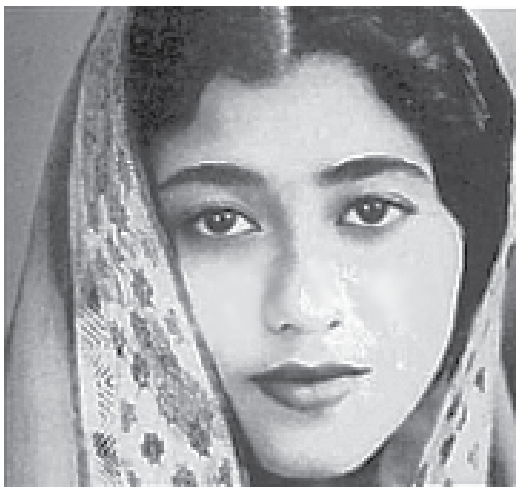

समस्त भारत के संगीत प्रेमी जब भी ठुमरी गायकों की नफ़ासत की बात करते हैं तब नैना देवी का नाम उनके होठों पर आकर ठहर जाता है। नैना देवी को संगीत की सभी धाराओं को संरक्षण प्रदान करके, उन्हें प्रोत्साहन देने का श्रेय भी दिया जाता है।

नैना देवी की खासियत यह है कि तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए उन्होंने ऐसे समय संगीत को अपना व्यवसाय बनाया जिस दौर में इज़्ज़तदार परिवारों की गिनी-चुनी महिलाएं ही इस क्षेत्र में क़दम रखने की इजाज़त या फिर साहस जुटा पाती थीं। कुछ महिलाएं जो संगीत की तालीम हासिल करने या गाने की हिम्मत करती थी वे ख़याल गायिका को अपनाती थीं। ठुमरी व गज़ल गायन शैली जो तवायफ़ों की परम्परा से जुड़ी थी की तरफ औरतों का रूझान कम ही था।

नैनाजी का जन्म बंगाल के उदारवादी ब्रह्म-समाजी परिवार में 1917 में हुआ। उनका असली नाम निलीना सेन था। नैना देवी उनका व्यावसायिक नाम था जो उन्होंने अपने पति के परिवार की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए उस समय अपनाया जब वे महफ़िलों में गाने लगीं। पर नैनाजी बनारस में गंगा के किनारे बैठकर गाना गाने वाली उस सुन्दर आंखों वाली औरत की कहानी भी सुनाती थीं जिससे प्रेरणा लेकर उन्होंने नैना देवी नाम अपनाया था।

नैना देवी समाज-सुधारक केशब चन्द्र सेन की पोती थीं। अपनी उम्र की लड़कियों से उनका बचपन अलग था। वे अपनी बहनों के साथ स्कूल जाती थीं बंगला व अंग्रेज़ी भाषा सीखती थीं और अपने दौर की प्रख्यात गायिका गिरिजा शंकर चक्रवर्ती से संगीत की तालीम लेती थीं। कम उम्र में ही वे नाटकों में हिस्सा लेती थीं तथा जानी मानी तवायफ़ों की महफ़िलों में भी गाना सुनने जाती थीं।

संगीत में दिलचस्पी लेने के लिए भाई सुनिथ सेन ने उन्हें प्रोत्साहित किया। बड़ी बहनें बिनीता व साधना ने भी नृत्य व संगीत के प्रति उत्साह बढ़ाया। सुनिथ सेन स्वयं एक दिग्गज संगीतज्ञ थे जिनके घर में संगीत की महफ़िलें आयोजित की जाती थीं। इनमें संगीत सुनते-सुनते वे अपनी गुरु माता से मिलीं और विधिवत शिक्षा पाने लगीं।

भारतीय संगीत के साथ नैना जी के घर वालों ने उन्हें पश्चिमी संगीत से भी परिचित कराया। उनके घर में पियानो था। ब्रह्म समाजी घरों में पियानो एक आम साज़ था जिसका उपयोग पूजा में किया जाता था। नैना जी भी पियानो बजाने की कोशिश करती थीं। वे अपनी बहनों के साथ मिलकर नाटक, नृत्य-नाटिकाएं रचती व अभिनीत करतीं। थोड़ी बड़ी होने पर वे समुदाय के नाटकों में भी हिस्सा लेने लगीं।

सत्रह-अट्ठारह वर्ष की होने पर उनका विवाह कपूरथला के राज परिवार के राजा रिपजित सिंह से हो गया। इस परिवार में गाना तो दूर औरतों को गाना सुनने की भी इजाज़त नहीं थी। हालांकि अब वे औपचारिक रूप से संगीत की तालीम नहीं ले पाती थीं फिर भी दरबार में होने

वाले मुजरे और संगीत महफ़िलों को वे चिलमन की ओट से सुनती थीं। हर मुजरे के बाद वे गाने वाली तवायफ़ को घर के अन्दर बुलाकर उनसे गाने सीखतीं और मौका मिलने पर गातीं।

1949 में उनके पति की मृत्यु हो गई। बत्तीस वर्ष की नैना जी अकेली रह गईं और अपने जैसी औरतों की तरह ससुराल से उन्हें किसी भी का सहयोग नहीं मिला। इसके साथ ही रियासत में उन्हें बाहरी समझा जाता था जिसके चलते उन्होंने कई वर्ष दुःख और अकेलेपन में बिताए। पर नैना देवी ने खुद को संभाला और 1954 में ऑल-इण्डिया रेडियो में ऑडीशन दिया। वहां पर काम मिलने पर बतौर ठुमरी-दादरा-गज़ल गायिका उनके व्यावसायिक सफ़र की शुरूआत हुई।

कुछ ही सालों में वे अपनी पहचान बनाने व स्थापित करने में कामयाब हो गईं। इसी समय के आसपास वे एक नए स्थापित संगीत-नाट्य विद्यालय की निदेशिका भी नियुक्त हुई। इस विद्यालय को आज श्री राम भारतीय कला केंद्र के नाम से जाना जाता है। इस पद पर रहते हुए उन्होंने संगीत की शिक्षा को गुरु-शिष्य परम्परा के तहत चलाने पर ध्यान दिया। साथ ही संगीत पाठ्यक्रम में भी अलग-अलग पद्धतियों का समावेश करने का प्रयास किया। उन्होंने विद्यालय में उस्ताद मुश्ताक हुसैन खान, रसूलन बाई, सिद्धेश्वरी देवी व पंडित शंभू महाराज जैसे दिग्गज संगीत विदों को तालीम दने के लिए आमंत्रित किया।

नैना देवी ने इस सभी कामों के साथ-साथ अपनी संगीत शिक्षा भी दोबारा शुरू की। सारंगी नवाज़ उस्ताद सबीर खान अम्बे वाले, रामपुर घराने के उस्ताद मुश्ताक हुसैन खान और बनारस अंग ठुमरी की दिग्गज रसूलन बाई से संगीत की बारीकियां सीखीं। इसी कारण उनके संगीत में इन सभी मशहूर संगीत शास्त्रियों के संगीत का अनूठा मिश्रण दिखाई देता है।

पर इतना सब कुछ करने के बाद भी उन्हें तसल्ली नहीं हुई। उन्हें एहसास था कि संगीत की उन्नति साज़िदों की मदद करने में निहित थी। इसी सोच को आगे ले जाते हुए उन्होंने कलाकारों के लिए आवासीय योजना शुरू की जिससे उन्हें रहने के लिए अच्छे मकान मिल सकें। अपने पूरे जीवन में उन्हें तवायफ़ों को होने वाली

साथी कलाकारों के साथ नैना देवी (दाहिने से दूसरी)

तकलीफ़ों को भी दूर करने की कोशिशें कीं। उनके लिए नेकदिल संरक्षक तलाश किए जो उनकी कला को मान-सम्मान दे सकें।

नैना देवी ने अपनी सबसे बड़ी त्रासदी-आवाज़ के खो जाने को भी एक सकारात्मक मोड़ दिया। इसी के चलते वे बरेली के ख्वानखाह-ए-नियाज़ी पीर साहिब अजीज मियां राज पिया की मुरीद बन गई। इसी के साथ सूफ़ी आध्यात्म के प्रति उनका लम्बा रूझान बना रहा।

एक गुरू की हैसियत से नैना जी दयालु, बड़े दिल वाली तथा प्रेरणा देने वाली थीं। उन्हें इस बात का अफ़सोस था कि संगीत सीखने वाले ठुमरी गायिकी को गंभीरता से नहीं लेते थे। वे दो-चार बंदिशें सीखकर उन्हें महफ़िल के समापन के लिए गाते थे। इसके बावजूद उन्होंने अपने दर पर आने वाले किसी भी शार्गिद को वापस नहीं लौटाया। जो कुछ भी गायक-गायिकाएं सीखने का अनुरोध करते वे उन्हें वह सिखा देतीं। मदद, सलाह, तालीम वे सभी कुछ दिल खोलकर देती रहीं।

करीबन सत्तर की उम्र में नैना देवी हृदयगति रुक जाने से इस दुनिया से चली गईं। उनका जीवन संगीत सीखने वालों, गायक-गायिकाओं और यहां तक कि नारीवादियों के लिए भी एक प्रेरक मिसाल है। उन्होंने अपने समय में वो राह चुनी जिस पर क़दम रखने की हिमाकत कुछ गिने-चुने नामों ने ही की। नैना देवी उन्हीं में से एक थीं।

***विद्याराव** नैना देवी की शिष्या व एक मशहूर ठुमरी गायिका हैं।*